9th class hindi notes Chapter 11 सूखी नदी का पुल

लेखक – परिचय

सूखी नदी का पुल **-रामधारी सिंह दिवाकर**

रामधारी सिंह दिवाकर रेणु की परंपरा के कथाकार हैं । दिवाकर ने हिंदी कथा साहित्य में आंचलिकता को नये रूप से सृजित किया । कहानियों को अपनी मनोरम कलाकृतियों से दिवाकर गाँव की धरती का जो चित्र खींचा है , वह अमिट छाप छोड़ जाता है । देश के स्वतंत्र हो जाने बाद नेताओं और कार्यकत्ताओं का ध्यान ग्रामोत्थान की ओर गया । दिवाकर की कहानियाँ अपनी गहरी संवेदना का परिचय देते हुए गाँवों से संपूर्ण अंतर्विरोधों और अंगड़ाई लेती हुई चेतना को जीवंत कथा – रूप दिया । गाँवों के बदलते हुए स्वरूप पर दृष्टिपात कर दिवाकर गाँव का असली चेहरा दिखलाते हैं । उनकी रचनाओं में माटी – पानी कहानी संग्रह आदि हैं ।

कहानी का सारांश :-

' सुखी नदी का पुल ' रामधारी सिंह दिवाकर आंचलिक कहानी है जिसमें उत्तर बिहार के गाँवों के बदलते हुए स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है । लीलावती को इस कहानी की नायिका कह सकते हैं और कहानी उसी के इर्द – गिर्द घूमती नजर आती है । लीलावती मुंबई जैसे बड़े महानगर में रहती है । वह अपने गाँव आती है यह सोचकर कि गाँव गाँव जैसा होगा । जैसे ही वह स्टेशन से बाहर आती है तो बाहर बैलगाड़ी की जगह जीप देखकर आश्चर्यचकित होती है । उसके मन में ठेस – सी लगती है । गाँव के बदलते हुए स्वरूप को देखकर चौंक जाती है । अपने खादी पहननेवाले भाई की जेब में पिस्तौल देखती है । भाई कहता है , समय ऐसा आ गया है बुच्चीदाय ! अपनी सुरक्षा के लिए यह सब अब रखना पड़ता है । गाँव अब पहले वाला गाँव नहीं रहा । जब से आरक्षण लागू हुआ है , बैकवार्ड – फारवार्ड की दुर्भावना बुरी तरह फैल गई है । गाँव में जातियों के अलग – अलग संगठन हो गए हैं , निजी सेनाएँ हो गई हैं ।

लीलावती यह सब सुनकर सन्न रह गयी । गाँव की वातावरण जो मेल – जोल से जीवन – यापन करता था , ' सभी एक – दूसरे के भाई – बहन थे , वे सब एक – दूसरे के जान के दुश्मन बने हुए हैं । वह इन तेरह – चौदह वर्षों में गाँव में बदले हुए स्वरूप पर अचरज करती है । लीलावती की कन्यादान में मिली हुई जमीन पर लीलावती की धाय माँ का बेटा कलेसर ने दावा ठोक दिया था , जिससे गाँव दो फाँक हो गया था । लीलावती ने इस विवाद का हल करते हुए जमीन की रजिस्ट्री अपने धाय माँ के नाम कर दी । जब जीप दरवाजे पर लगी तो लीलावती देखती है कि एकदम बदल गया है घर – दुआर । खपरैल की जगह पक्के का मकान । दरवाजे पर जीप ट्रैक्टर , थ्रेसर मशीन और जेनरेटर । बिजली के पोल गाँव तक आ गए हैं । फोन , फ्रीज , टीवी , वीसीपी , सब कुछ । लीलावती यह सब नहीं देखने आयी थी । वह पहलेवाली असुविधाओं के लिए तरस रही है । सखी – सहेलियाँ , नदी – पोखर , खेत – खलिहान , टोले – पगडडियाँ , नाथ बाबा का थान्ह , राजा सल्हेज का गहबर , बुड़िया बाड़ी , बरहर बाया का मंदिर कैसे कहे कि क्या देखना चाहती है बुआ । लीलावती ने अपना कर्ज उतारने के लिए जमीन की रजिस्ट्री सहेलिया माय के नाम कर दोनों टोले खवासटोली और बबुआन टोली में मेल – मिलाप करवा लेती है ।

https://www.evidyarthi.in/